संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

सीसीआरटी समाचार

CCRT Newsletter

खण्ड 2 • अंक 7 • जुलाई 2024

Volume 2 • Issue 7 • July, 2024

कला मंथन

महान ग्रीक दार्शनिक अरस्तू (अरिस्टॉटल) के मतानुसार मनुष्य की आत्मा तार्किक तथा अतार्किक इन दो भागों में विभाजित है। अत: इन दोनों भागों में सामंजस्य तथा सहकार आवश्यक है। इनमें से उत्पन्न कृति ही पूर्ण रूप धारण कर सकती है। तर्क, मनोबल तथा इच्छा इनमें सामंजस्य प्रस्थापित करना ही मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है। इस प्रकार केवल 'कृति' नहीं, 'पूर्ण कृति' (कम्प्लीट ऐक्शन) शोकनाटक का विषय है। कृति तभी पूर्ण मानी जाएगी जब उसमें तर्क, अंतर्दृष्टि, प्रज्ञा, शारीरिक क्षुधा (भूख), भय, कोध, इच्छा इत्यादि भावनाओं का 'मिश्रण' होगा। केवल इंद्रियों तथा तर्क पर आधारित कृति पूर्ण हो गई ऐसा नहीं माना जाएगा। उनके मिश्रण से किसी सद्गुणी नीतिपूर्ण कृति का जन्म हो सकता है। तार्किक तथा अतार्किक शक्ति के योग से एक पूर्ण कृति (कार्य-व्यापार) निर्माण करने की क्षमता केवल मनुष्य में है अन्य प्राणियों में नहीं, यह बात अरिस्टॉटल ने स्पष्ट की है।

ऐसी कौन सी बात होती है जो मनुष्य को कृति करने के लिये प्रवृत्त करती है? अरिस्टॉटल ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि 'इच्छा' मनुष्य को कृति करने के लिये प्रवृत्त करती है और उसे प्रेरित भी करती है। हमारी इंद्रियां बाह्य पदार्थों से प्रेरित होती हैं। ऐसे समय हम या तो पदार्थ की प्राप्ति हेतु या फिर उससे छुटकारा पाने के लिए कार्यप्रवृत्त होते हैं और कृति करते हैं, किन्तु ऐसा हमेशा नहीं होता कि पदार्थ प्रस्तुत होते ही उसे प्राप्त करने हेतु हम प्रवृत्त हो जाते है। उच्च प्रकार की कृति में बाह्य पदार्थों से प्ररित होने की आवश्यकता नहीं होती। पदार्थ हमारे समक्ष प्रस्तुत होते ही हमारी इंद्रियां उससे प्रभावित हो जाती हैं, इतनी प्रभावित हो जाती हैं कि वह पदार्थ हमारे समक्ष नहीं भी रहा तब भी वह प्रभाव बना रहता है। परंतु यह तभी होता है जब हम उस पदार्थ के बहुत करीब होते हैं। हमारे शरीर तथा आत्मा पर उसकी प्रतिक्रिया दिखाई देती है। यह प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष प्रस्तुतिकरण से भी अधिक 'तीव्र' होती है। यह सब अचेतन अवस्था से क्रियान्वित होता है। अचेतन मन में घटित इन चित्रों को चेतन मन (कॉन्शस माइंड) में लाया जा सकता है। इसके लिए 'कल्पना' नामक मन:शक्ति की आवश्यकता होती है। कल्पना ही हमारी स्मृति, स्वप्न तथा पु:नस्मरण के लिये उत्तरदायी है।

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी

प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

जुलाई 2024 की प्रमुख गतिविधियाँ

प्रशिक्षण अनुभाग-I / TRAINING SECTION-I

• पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्त्व

(15-16 जुलाई, 2024, सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली)

सीसीआरटी ने 15-16 जुलाई, 2024 को नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में 'पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्त्व' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 16 राज्यों/संघ शासित प्रदेशों से 41 प्रतिभागी (08 महिला सहित) शामिल हुए। कार्यशाला में उन्नत समेकित कला शिक्षा पर गहन सत्र आयोजित किए गए। मुख्य आकर्षणों में कठपुतली और पारंपरिक खिलौने, संचार कौशल बढ़ाने के लिए नाट्यकला और माइम, उन्नत हस्तकला तकनीकें और 'फड़ से पढ़' के माध्यम से पारंपरिक कला के साथ आधुनिक शिक्षा का संयोजन शामिल था।

सत्रों का संचालन श्रीमती सीमा वाही मुखर्जी, श्री गुलशन वालिया, श्री प्रमोद शर्मा और रूफटॉप टीम के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में किया गया। ये सत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप थे और इनमें वर्तमान समय के पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका उद्घाटन किया गया। कार्यशाला का समापन राजस्थान के बाड़मेर से सीसीआरटी छात्रवृत्तिधारक एवं अध्येता श्री बुगरा खान और उनकी टीम द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी लोक संगीत की एक जानदार और रोमांचक प्रस्तुति के साथ हुआ।

• एनईपी-2020 के अनुरूप 487वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम

(18 जुलाई - 07 अगस्त, 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद)

18 जुलाई - 07 अगस्त, 2024 तक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद में 487वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में 14 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से 65 शिक्षक (15 महिला शिक्षक सहित) शामिल हुए। यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप था और इसमें शिक्षकों को पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को एकीकृत करते हुए कला एवं संस्कृति को शिक्षा/शिक्षण में समावेशित कैसे करें, इस पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिभागियों ने कला और संस्कृति के सैद्धांतिक सत्रों के साथ-साथ विभिन्न हस्तकला सत्रों में भी भाग लिया। इनमें मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, बांधनी और कागज के खिलौने निर्माण प्रक्रिया शामिल थी। इसके अतिरिक्त शिक्षकों ने स्थानीय संग्रहालयों और प्राकृतिक उद्यानों का शैक्षिक भ्रमण किया, जिससे उन्हें व्यावहारिक शिक्षण का अनुभव मिला।

• एनईपी-2020 के अनुरूप 488वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम

(24 जुलाई - 13 अगस्त 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी)

24 जुलाई - 13 अगस्त 2024 तक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में 488वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में 13 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से 62 शिक्षक (17 महिला शिक्षक सहित) शामिल हुए। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप था और इसमें शिक्षकों को कक्षा में सांस्कृतिक तत्वों का समावेश करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। सत्रों में पारंपरिक कला और संस्कृति, शैक्षिक दर्शन और व्यावहारिक कार्यशालाओं पर विशेष जोर दिया गया। प्रतिभागियों ने गुवाहाटी के संग्रहालयों और प्राकृतिक स्थलों का दौरा किया, जहां उन्होंने स्थानीय संस्कृति और इतिहास का प्रत्यक्ष अध्ययन किया।

इन सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों को उनके शिक्षण दृष्टिकोण में विविधता लाने और समग्र शिक्षा के लिए पारंपरिक और आधुनिक पद्धतियों को एकीकृत करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना है। इन कार्यक्रमों ने शिक्षकों को एक सहयोगात्मक और ज्ञानवर्धक वातावरण प्रदान किया, जहां वे अपने विचारों और अनुभवों को साझा करने में सफल रहे।

प्रशिक्षण अनुभाग-II (कार्यशाला)/ TRAINING SECTION-II (WORKSHOP)

• 'विद्यालयी शिक्षा में हस्तकला कौशल का समावेश' पर कार्यशाला

(03 - 12 जुलाई, 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह)

इस कार्यशाला में 10 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 45 शिक्षक (20 महिला शिक्षक सहित) शामिल हुए। यह कार्यशाला विद्यालयों में संस्कृति एवं कला की भूमिका को बढ़ाने के लिए पारंपरिक हस्तकला कौशल को शिक्षा में समावेश करने पर केंद्रित रही। इसके विभिन्न व्याख्यान व प्रदर्शन सत्रों में भारतीय हस्तशिल्प पर सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव और भारतीय समाज में कारीगरों की भूमिका पर चर्चा की गई।

प्रतिभागियों ने विभिन्न पारंपरिक हस्तकला जैसे मिट्टी और कुम्हार कला, जूट का काम, चित्रकला और बांस शिल्प की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। कार्यशाला का समापन सिद्धि समारोह के आयोजन के साथ हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने अपने तैयार किए गए हस्तकला उत्पादों, परियोजना कार्य एवं पाठ योजनाओं को प्रदर्शित किया।

इस कार्यशाला से शिक्षकों को अपने शिक्षण-कार्य में हस्तकला कौशल को

प्रभावी रूप से समावेश करने के लिए नए दृष्टिकोण एवं तकनीकों को सीखने का अवसर मिला। प्रतिभागियों ने हाथों से विभिन्न हस्तकला बनाने की प्रक्रिया में भाग लिया, जिससे उन्हें शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के तरीके मिले। इस अनुभव से निश्चित ही उन्हें अपने छात्रों के लिए और अधिक आकर्षक और परस्पर संवादात्मक शिक्षण वातावरण बनाने में सहायता मिलेगी।

• 'विद्यालयी शिक्षा में हस्तकला कौशल का समावेश' पर कार्यशाला

(18 - 27 जुलाई 2024, सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली)

इस कार्यशाला में भारत के 16 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 95 शिक्षक (21 महिला शिक्षक सहित) शमिल हुए। यह कार्यशाला नई शिक्षा नीति -2020 के अनुरूप विद्यालयी शिक्षण पद्धति में संस्कृति एवं कला के समावेश पर केंद्रित थी जिसके अंतर्गत भारतीय पारम्परिक हस्तकला कौशल के महत्त्व पर विशेष जोर दिया गया। विभिन्न व्याख्यानों, प्रदर्शनों व प्रशिक्षण के माध्यम से विभिन्न पारंपरिक हस्तकलाओं जैसे मिट्टी का कार्य, बांधनी, रस्सी की गाँठे, कागज की लुगदी का कार्य, जिल्दसाजी व मधुबनी चित्रकला आदि का पारंपरिक कलाकारों व कारीगरों द्वारा प्रतिभागियों को प्रायोगिक कक्षाओं में प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला का समापन सिद्धि समारोह के आयोजन के साथ हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने अपने तैयार किए गए हस्तकला उत्पादों, परियोजना कार्य एवं पाठ योजनाओं को प्रदर्शित किया तथा उन्हें कार्यशाला में प्रशिक्षित होने संबंधी प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

इस कार्यशाला से शिक्षकों को अपने शिक्षण-कार्य में हस्तकला कौशल को प्रभावी रूप से समावेश करने के लिए नए दृष्टिकोण एवं तकनीकों को सीखने का अवसर मिला। प्रतिभागियों ने हाथों से विभिन्न हस्तकला बनाने की प्रक्रिया में भाग लिया जिससे उन्हें शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के विभिन्न तरीके मिले। इस अनुभव से निश्चित ही उन्हें अपने छात्रों के लिए ओर अधिक आकर्षक और परस्पर संवादात्मक व प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने में मदद मिलेगी।

- **'एनईपी-2020 के अनुरूप शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका' पर कार्यशाला**

(19 जुलाई - 02 अगस्त 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर)

इस कार्यशाला में भारत के 09 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 53 शिक्षक प्रतिभागी (16 महिला शिक्षक सहित) शामिल हुए। उन्हें इस कार्यशाला द्वारा पुतलीकला की शिक्षा में शक्तिशाली व प्रभावी भूमिका को जानने का अवसर मिला। प्रतिभागियों ने पुतलीकला के माध्यम से कक्षा में नवाचार, आचरण शिक्षण तरीके से पढ़ाने के गुर सीखे, जो एनईपी-2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप थे।

कार्यशाला के दौरान अनुभवी कठपुतली कलाकारों एवं विषय-विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया ताकि वे कठपुतली की अभिव्यक्तिपूर्ण संभावनाओं का उपयोग करके कक्षा में सहभागिता बढ़ाने और समूह में सीखने के अनुभव को प्रोत्साहित कर सकें। सत्रों में कठपुतली कला सीखने और स्वयं के शिक्षण माध्यमों के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लिया गया, जिससे शिक्षकों को अपने कक्षाओं में कठपुतली के उपयोग को शामिल करने का अवसर मिला।

प्रतिभागियों ने कठपुतली के विभिन्न रूपों की तकनीकों और उनकी सांस्कृतिक महत्ता पर गहन चर्चा की। सत्रों के दौरान उन्होंने सीखा कि कैसे कठपुतली का उपयोग बच्चों में रचनात्मकता, संचार कौशल एवं टीम वर्क को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। कार्यशाला के अंत में शिक्षकों ने अपनी कठपुतली प्रस्तुतियों और शिक्षण विधियों को साझा किया और कार्यशाला में सीखे गए ज्ञान और कौशल को व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित किया।

छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति / SCHOLARSHIP AND FELLOWSHIP

छात्रवृत्ति अनुभाग ने वर्ष 2022-23 के लिए वरिष्ठ अध्येता योजना के तहत नए आवेदकों के सार के मूल्यांकन के साथ-साथ संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को फेलोशिप प्रदान करने की योजना के तहत जूनियर और सीनियर फेलो की मध्यावधि/अंतिम रिपोर्ट के मूल्यांकन के लिए 01 से 12 जुलाई 2024 तक विशेषज्ञ समिति की वर्चुअल/ऑनलाइन बैठक आयोजित की।

इसके अलावा छात्रवृत्ति अनुभाग ने वर्ष 2024-25 के लिए "सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति" के लिए 16 जुलाई 2024 को पूरे भारत के 142 समाचार पत्रों में आवेदन संबंधी विज्ञापन प्रकाशित किया।

विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम/EXTENSION SERVICES AND COMMUNITY FEEDBACK PROGRAMME (ESCFP)

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	राजकीय को-एड सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, बिंदापुर, जनकपुरी, नई दिल्ली	18-20 जुलाई 2024
2.	राजकीय सीनियर सेकेंडरी बालिका विद्यालय, जनकपुरी, नई दिल्ली	18-20 जुलाई 2024
3.	राजकीय सीनियर सेकेंडरी बाल विद्यालय, निठारी, नई दिल्ली	22-24 जुलाई 2024
4.	सर्वोदय बाल विद्यालय, कामधेनु, मंगोलपुरी, नई दिल्ली	22-24 जुलाई 2024

क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	जिला परिषद हाई स्कूल (बाल), मलकजगिरी, जिला मेडचल-मलकजगिरी, तेलंगाना	01-03 जुलाई 2024
2.	जेड.पी. हाई स्कूल (बाल), मंडल अलवाल, जिला मेडचल-मलकाजगिरी, तेलंगाना	08-10 जुलाई 2024
3.	जेड.पी. हाई स्कूल (बालिका), मंडल अलवाल, जिला मेडचल-मलकाजगिरी, तेलंगाना	18-20 जुलाई 2024
4.	राजकीय हाई स्कूल, कुलसुमपुरा, कारवाँ, हैदराबाद	22-24 जुलाई 2024
5.	जेड.पी. हाई स्कूल, मंडल दम्मइगुडा, जिला मेडचल-मलकाजगिरी, तेलंगाना	25-27 जुलाई 2024

क्षेत्रीय केन्द्र, दमोह

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बजेड़ा, दमोह	22-24 जुलाई 2024

जुलाई 2024 महीने में सीसीआरटी मुख्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्र में कुल 3643 बच्चों को विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया।

ग्रीष्म कालीन शिविर 'इंद्रधनुष 2024', गुवाहाटी

सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में 09-19 जुलाई 2024 तक 07-16 आयु वर्ग के बच्चों के लिए "ग्रीष्मकालीन शिविर इंद्रधनुष -2024" का आयोजन किया गया जिसमें 97 बच्चों ने भाग लिया।

डिजिटल जिला रिपोजिटरी/DIGITAL DISTRICT REPOSITORY

भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की संकल्पना को साकार करने के लिए "आजादी का अमृत महोत्सव" नामक महत्वाकांक्षी परियोजना वर्ष 2021 में आरंभ की गई और इसका दायित्त्व भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय सौंपा गया। संस्कृति मंत्रालय द्वारा देश भर में "हर घर तिरंगा", "मेरी माटी मेरा देश" जैसे देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत बड़े कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इस श्रृंखला का एक प्रमुख कार्यक्रम डीडीआर अर्थात् डिजिटल डिस्ट्रिक्ट रिपोजिटरी प्रोजेक्ट है जो देश की आजादी से जुड़े गुमनाम नायक-नायिकाओं, घटनाओं और स्थानों को देश के सामने लाने के उद्देश्य से अक्तूबर 2022 में शुरू की गई। संस्कृति मंत्रालय द्वारा इस परियोजना की जिम्मेदारी सीसीआरटी को सौंपी गई। इस महत्त्वकांक्षी परियोजना का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत डी.डी.आर. (डिजिटल डिस्ट्रिक्ट रिपोजिटरी) परियोजना भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अभिलेखों को संरक्षित, प्रलेखित और डिजिटाइज करने के उद्देश्य से एक व्यापक पहल है। परियोजना के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

उद्देश्य: डी.डी.आर. परियोजना का प्राथमिक लक्ष्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों, दस्तावेजों, तस्वीरों और अन्य सामग्रियों को एकत्रित, संरक्षित और डिजिटाइज करना है। इनमें पांडुलिपियाँ, पत्र, भाषण, प्रमुख घटनाओं की तस्वीरें और स्वतंत्रता सेनानियों की निजी वस्तुएँ शामिल हैं।

क्षेत्र: परियोजना में राष्ट्रीय अभिलेखागार, पुस्तकालय, संग्रहालय और भारत भर के निजी संग्रह जैसे विभिन्न स्रोतों से सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इसका उद्देश्य ऐसी सामग्री एकत्र करना है जो स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन, संघर्ष और योगदान के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

डिजिटाइजेशन प्रक्रिया: डी.डी.आर. परियोजना के तहत एकत्र किए गए अभिलेखों और दस्तावेजों को उनके दीर्घकालिक संरक्षण और पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए उन्नत तकनीकों का उपयोग करके डिजिटाइज किया जाता है। इस डिजिटलीकरण प्रक्रिया में स्कैनिंग, कैटलॉगिंग और डिजिटल अभिलेखागार बनाना शामिल है, जिन्हें ऑनलाइन ऐक्सेस किया जा सकता है।

पहुंच: एक बार डिजिटल हो जाने के बाद ये रिकॉर्ड शोधकर्ताओं, विद्वानों, इतिहासकारों और आम जनता के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और अभिलेखागार के माध्यम से सुलभ हो जाते हैं। इससे विभिन्न उद्देश्यों के लिए भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में शोध और अध्ययन करना आसान हो जाता है।

सार्वजनिक जुड़ाव: इस परियोजना में भारत के स्वतंत्रता के इतिहास के बारे में जन जागरूकता और जुड़ाव को बढ़ावा देने की पहल भी शामिल है। इसमें दस्तावेजों और उनके ऐतिहासिक संदर्भ के महत्व को उजागर करने के लिए प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, शैक्षिक कार्यक्रम और सार्वजनिक अभियान शामिल हैं।

डीडीआर स्टोरीज चरण - I और II

- सीसीआरटी को 'डीडीआर प्रोजेक्ट' के तहत 5,000 कहानियाँ/स्निपेट एकत्र करने का काम सौंपा गया। कहानियों का विवरण इस प्रकार है:
- सीसीआरटी को प्राप्त कहानियाँ -14831
- डीडीआर पोर्टल पर अब तक अपलोड की गई कहानियाँ - 7646

सीसीआरटी में डीडीआर परियोजना की फलीभूत करने के लिए इससे जुड़े देश भर के प्रशिक्षित शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, जिला स्रोत व्यक्तियों (डीआरपी) और साथ ही आम जन से कहानियां एकत्र करने का औपचारिक अनुरोध किया गया और प्राप्त कहानियों की सत्यता की जांच करने के बाद उन्हें संपादित तथा पुनरीक्षित करके संस्कृति मंत्रालय को भेजा गया। संस्कृति मंत्रालय के स्तर पर दोबारा इन कहानियों की जांच, संपादन और पुनरीक्षण करने के बाद सही पायी गई कहानियां मंत्रालय की वेबसाइट https://amritmahotsav.nic.in>digital district repository पर अपलोड की गईं।

इस परियोजना के प्रथम चरण के अंतर्गत इस वेबसाइट पर 14 नवंबर 2022 को पहली कहानी अपलोड की गई, जो इस प्रकार है:

केसर सिंह, पठानकोट, पंजाब

स्वतंत्रता सेनानी सरदार केसर सिंह का जन्म 13 अप्रैल 1892 को उनकी माता आस कौर और पिता सरदार गुरदित सिंह के घर गाँव गुड़ी, जिला मीरपुर में (अब पाकिस्तान में) हुआ था। बचपन से ही स्वतंत्र और धार्मिक विचारों वाले केसर ने आठ साल की उम्र में घर छोड़ दिया और अमृतसर में हरमंदिर साहिब की सेवा करने लगे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के लिए बलिदान करने का संकल्प लिया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने 18 वर्षों की सजा काटी।

भारत सरकार द्वारा केसर सिंह को प्रदान किया गया ताम्र पत्र

मेरठ बम कांड में उन्हें जिंदा या मृत पकड़ने पर पाँच हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। सरदार केसर सिंह ने गोमती नदी के किनारे लखनऊ में एक कुली के वेश में बस स्टेशन पर काम किया। भेद खुलने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उसी मामले में उन्हें मौत की सजा सुनाई गई, लेकिन पहचान परेड में वे बरी हो गए।

केसर सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम में कई आंदोलनों में भाग लिया जिनमें भारत छोड़ो आंदोलन, पंजा साहिब मोर्चा और गुरु के बाग का मोर्चा शामिल हैं। देश की सेवा करने और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार की ओर से ताम्र पत्र से सम्मानित किया गया। उनका निधन 19 फरवरी 1996 को हुआ।

स्रोत: सिद्धार्थ चंदर, डीआरपी (पठानकोट), सीसीआरटी

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली:	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र:
डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर, अध्यक्ष, सीसीआरटी	**श्री वाई. चन्द्र शेखर,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री राजीव कुमार (भा.रा.से.), निदेशक, सीसीआरटी	**श्री आशुतोष,** उप निदेशक (सामान्य) एवं प्रभारी सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान
डॉ. राहुल कुमार, उप निदेशक (प्रशिक्षण)	**श्री निरंजन भुइयां,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम
डॉ. संदीप शर्मा, उप निदेशक (मूल्यांकन)	**श्री के.एस.एल. गणेश,** उप निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह
श्री दिबाकर दास, उप निदेशक (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति)	
श्री के.एस.एल. गणेश, उप निदेशक (प्रशासन)	
श्री आशुतोष, उप निदेशक (सामान्य)	
श्री श्रीभगवान वर्मा, उप निदेशक (उत्पादन)	
श्री मनीष कुमार, हिन्दी अधिकारी	

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत

दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial

संरक्षक: **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री राजीव कुमार**, निदेशक, सीसीआरटी

संपादक: **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कटोच**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर